'समूह निर्माण एवं उद्यमिता विकास' विषयक प्रशिक्षण प्रारम्भ

पंतनगर। 2 सितम्बर, 2009। विश्वविद्यालय स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रषिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा आयोजित 'समूह निर्माण एवं उद्यमिता विकास' विषयक चार–दिवसीय प्रषिक्षण कार्यक्रम के उद्‌घाटन अवसर पर कार्यवाहक निदेषक, समेटी–उत्तराखण्ड, डा.वाई.पी. एस. डबास ने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियाँ अन्य राज्यों से बहुत भिन्न हैं। उन्होंने कहा कि जलवायु विभिन्नता में कृषि विविधीकरण के दोहन एवं संरक्षण हेतु क्षेत्रीय जनमानस को जागृत करने तथा एक कड़ी के रूप में जोड़ने हेतु सरकारी संस्थाओं, गैर सरकारी संस्थाओं, सहकारी संस्थाओं तथा निजी क्षेत्रों की सहभागिता नितान्त आवष्यक है। ग्रामीणों को उन्हीं की परिस्थितियों में सामूहिक रूप से संगठित करके अधिक लाभप्रद कृषि व्यवसाय हेतु प्रोत्साहित करने तथा अधिक लाभ प्राप्ति के उद्देष्य हेतु उनके जीवन स्तर को सुधारने की डा. डबास ने आवश्यकता बताई तथा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह निर्माण द्वारा ग्रामीणों की भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि बहुत सी संस्थाओं द्वारा ऐसे समूह ग्रामीण स्तर पर खड़े तो कर दिए गए हैं परन्तु अकुशल संचालन के कारण अधिकांषतः या तो निष्क्रिय हो गये हैं अथवा छोटे–छोटे उद्देष्यों की पूर्ति करते हुए क्रियाषील हैं। डा. डबास ने कहा कि समूहों को समगतिषील बनाए जाने हेतु समूहों में सामूहिक कार्य के साथ–साथ सामूहिक हित का जुड़ा होना भी आवष्यक है जो सामूहिक उद्यमों के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इसलिए उन्होंने समूहों का उद्यमिता विकास की तरफ अग्रसर होना नितान्त आवष्यक बताया जिससे कृषि को भी व्यवसायिक स्वरूप प्रदान किया जा सकेगा।

निदेषक संचार, डा.बी. कुमार ने कहा कि मनुष्य के बौद्धिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास में समूह का विषेष योगदान रहा है। मानव अपना जीवन एक परिवार, जो समूह की सबसे छोटी इकाई मानी जाती है, से शुरू कर स्वयं के चहुमुंखी विकास के लिए विभिन्न समूहों से जुड़ता जाता है। सरकार की नई नीतियां भी इस धारणा को सषक्त बनाती हैं। उन्होंने कहा कि हम सामुहिक रूप से अपने साथ–साथ अपने गांव, क्षेत्र एवं देष का विकास कैसे करें और अपने समूह को सफल कैसे बनाएं, यह जानना बहुत आवष्यक है। उन्होंने 'अमूल' एवं कृषकों के 'महाग्रेप्स' की सफलता को, समूहों द्वारा उन्नति के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रषिक्षण कार्यक्रम का संचालन कर रहे सह निदेषक प्रसार षिक्षा, डा.आर.पी. सिंह ने प्रषिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न विषयों की जानकारी दी जिनमें विष्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा प्रषिक्षण दिया जायेगा। इस प्रषिक्षण में उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से आये कृषि एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारी प्रतिभागिता कर रहें हैं। इस प्रशिक्षण के आयोजन में डा.बी.वी. सिंह एवं डा. जितेन्द्र सिंह ने भी योगदान दिया।